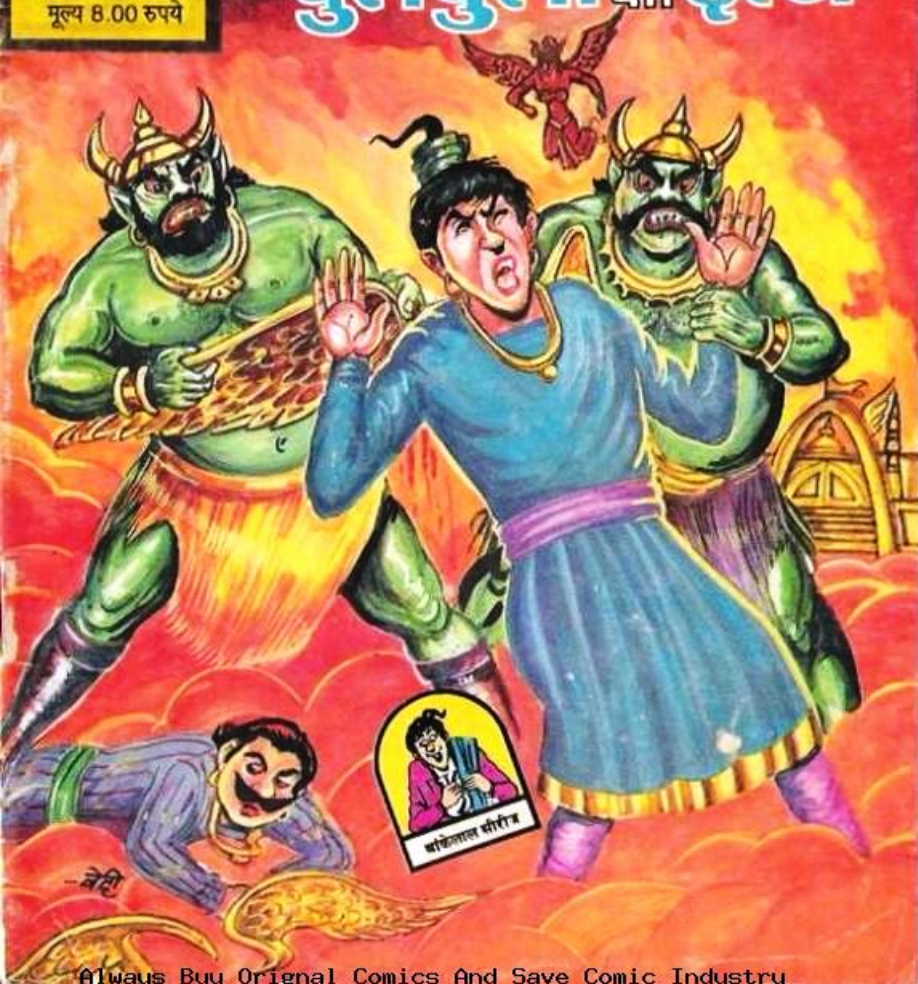


राज

कॉमिक्स

मूल्य 8.00 रुपये

बांकलाल और बुलबुला का दैत्य



बांकेलाल और बुलबुला का दैत्य

चित्रांकन : बौद्धी
लेखक : तरुण कुमार वाही
सम्पादन : मजीब चन्द्र गुप्त



परी लोक



बादलों की
बुदबुदी धरती,
एक बार फिर
हमारे कदमों के
नीचे हैं बांकेलाल!

ये बुदबुदी
धरती
परीलोक
की है, सद्गुरु
हम परीलोक
में आ पहुँचे
हैं।

परीलोक में प्रवेश करते ही -

अरे ! बाँकेलाल, यह क्या ? हमारे 'पर' निकल आते हैं !

आप भूल रहे हैं महाराज कि हम परीलोक में हैं जहाँ सब नागरिकों के परचम उड़ रहे हैं !

वह देखिए !

हम परियों की मदद से हम उड़ भी सकते हैं ! वाह !

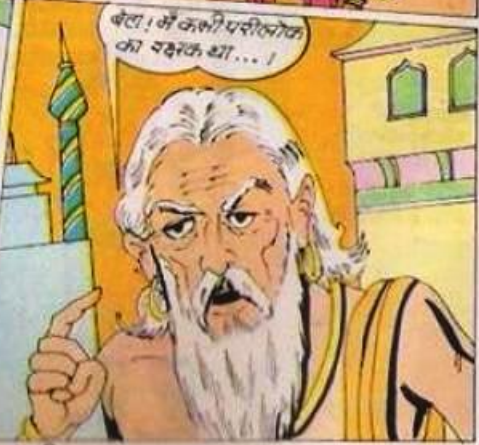
बाँकेलाल ! उड़ते हुए तुम लौटा लगे रहें हो ! ही ही ही !

जैसे ही बाँकेलाल नीचे उतरा -

तुम दोनों शाश्वत नगरे आए हो परीलोक में ! इसलिए मैं तुम्हें एक बात बताना चाहता हूँ !

आप कौन हैं बाबा ? और यह क्या, आपके परचम कहाँ आए ?

बेला ! मैं कभी परीलोक का रक्षक था...



परीलोक का एक पड़ोसी राज्य है- बुलबुला ! जहाँ दैत्यों का राज है ।

धूल्ल कबड्डी कबड्डी कबड्डी !



... दैत्यों का राजा बुलबुला एक पूरा प्रवृत्ति का दैत्य है, जिसकी परीलोक से आज तक नहीं पटी...

हा हा हा हा । कितना रोचक खेल है । ये खेल हमने पृथ्वीलोक से सीखा है । हा हा हा ।

...कबड्डी ५५ कबड्डी ५५ कबड्डी ५५ उफ!



... बुलबुला के दैत्यों को एक वस्तु बेवद ज्यारी है हम परीलोक वासियों की...

वैद्यराज की जय हो । वैद्यराज, मैं चक्रवर्त देश का व्यापारी बक्रम हूँ । मानवों के स्वादिष्ट डिब्बा बन्द अंगों के शिला शिले में...



... मैं आपके राज्य में आया हूँ ।

... और आपके लिए लाया हूँ भेंट, परीलोक की एक परी के 'पसे' का जोड़ा ।



परीलोक के परी के 'पर' वाह !

चक्रवर्त देश के दूसरे व्यापारी बक्रम को मानव के डिब्बा बन्द स्वादिष्ट अंगों के आयात का पुरा आदेश दे दो ।



उधर बुढ़ा परा' छवच्छक ही उदास होकर कह उठा -

बच्चो ! मैं तुम्हें यही बताना चाहता हूँ कि परीलोक की उत्तरी सीमा पार करने की चेष्टा कभी न करना । अन्यथा अपने पंखों से हाथ धो बैठोगे, जैसे मैं धो बैठा ! बहूहूहू !

ओह ! तो यह बात है !



आर फिक्क न करें बाबा ! हम उत्तरी सीमा पार करने की चेष्टा कभी न करेंगे ।

किन्तु बाबा ! क्या दैत्य परीलोक में नहीं आ सकते ?

नहीं ! परीलोक की परिसानी तितोली की उनके वृक्षों के सिने वरदान के कारण अगर दैत्यों ने परीलोक में प्रवेश की चेष्टा की तो वे जलकर भस्म हो जायेंगे ।



बतला कह कर परा आगे बढ़ गया ।

बुढ़े के जाते ही -

बाकेलाल ! कला हमें क्या अकसर पसी है परीलोक की उत्तरी सीमा पार करने की !

जी हाँ महाराज ! आइये आगे बढ़ें !



चलते - चलते सहसा विक्रमसिंह कह उठे -

बाकेलाल ! बचपन में हम एक खेल खेलते करते थे - पकड़ना पकड़ाई का ।

जी हाँ महाराज ! बचपन के दिन भी क्या दिन थे !



बाकेलाल ! आज हमारी दृष्टि फिर वही खेल खेलने की हो रही है !

क्या ? किन्तु महाराज, ... इस उम्र में खेल क्या आपको बोला देगा ?



ठीक से खलाभी नहीं जरा मोटे लुच्छड़ से और एकड़म - पकड़ाई खेलेंगा ।





चलो अच्छा हुआ मोटे
मुच्छाड़ से जान धूटी।
ही ही ही।

उड़ता हुआ मैं इसे
तलैया लेकर रहा था। अब
पारा चलेगा बच्चू को
जब देखो के पंजे
मैं कैसेगा।



और तभी-

पकड़ लो
बाकेलाल
को।



हाय। ये
मुसीबत कहाँ
से आ गई।

बहुत ही
क... कौन हो
तुम ?



मैं हूँ बुलबुला
का प्रहरी ताड़ु।

और मैं
बुलबुला का
प्रहरी मरोड़।

उधर विक्रमसिंह पर भी दृढ़ पड़ा मुसीबतों का
पहाड़।

हा हा हा। एक ओर
मर्का फंस गया
ताड़ु-मरोड़ के
जाल में।



पकड़ लो
इसे। हा हा
हा।

ये जो पंख तुम हमारी पीठ
पर उठो देखते रहो हो न ये तुम
परीलोक वासियों के ही हैं
जो तुम्हारी तरफ ही पकड़म-
पकड़ाई खेलते हुए बुलबुला
की सखा में आ चुके थे।
ही ही ही।

क्या! उफ!
तो क्या मैं
बुलबुला
में प्रवेश कर
गया। नहीं!
बाकेलाल
कहाँ गया?





दैत्यों तोड़ ने एक ही झटके से तोड़ डाले विक्रमासिंह के पंख -



नहीं। मेरे पंख तोड़ते ही मैं नीचे गिर जाऊँ, भा बचाओ।



आहsss मेरे पाया।



छबरा नहीं कोटे, नीचे गिर कर तुम्हें चोट नहीं लगेगी।



बचाओss

विक्रमसिंह गिरा बाहुलों की नरमव
बुदबुदी धरती पर।

आह!



घस्स

इस दुष्ट को
कड़े से कड़ा
दण्ड मिलना
चाहिए।

मर
गए!

चौखलसिंह ! इस
परीचाली निलोली
के पास ले
चलो। वही
करेगी
इसका
फैसला।



बहु देव बाकेलाल को दबाये चहुँ सैनिक क्रोध में
भर उठे -

बाकेलाल !
तुम्हारे कारण
एक निर्दोष व
मासूम परा
को अपने
पंखों से
हाथ धोना
पड़ा।

म... मठार (बूहूहूहूहू)
मेरी बात तो सुनो...
इसमें मेरा क्या कुसूर...
मैंने तो...



परीचाली
निलोली बहु सख
सुनते ही आवा-बबुला
हो उठी-

क्या ? परीचाली के
रहकर ऐसी
उद्गड़ता।



बाकेलाल ! हम तुम्हें
ऐसा दण्ड देगे कि तुम
अपनी सारी शौचालियाँ
भूल जाओगे।





बांकेलाल का कोढ़ जा पहुंचा सातवें आसमान पर -



मेरी बूतनी
बेहूज्जती कभी नहीं
हुई। अपनी बूत बेहूज्जती
का बदला मैं जरूर लूंगा
परीसानी से।

अपनी बोढ़ी में गांठ मारकर मैं ये
प्रतिज्ञा करता हूँ कि जब तक बूत सब
को 'पंखलुंडा' न कर दूँगा, मुझे चैन
नहीं मिलेगा।



अपनी
बोढ़ी की
गांठ की
मैं तभी
खोलूँगा।

उन्हीं दिनों बुलबुला के दैत्यों का आरंभ पृथ्वी
पर भी फैला था -

परीलोक के
'पराओं' के
पंखों के कारण
उड़कर हम
पृथ्वी तक
आसानी से
पहुँच जाते
हैं। ही ही
ही ही।



दोनों धरती पर
आ पहुंचे -

मरोड़ु। वह रहा
मानवों का
नगर, अनारपुर। हमें उसे जीवित मानव
चाहिए।

अनारपुर

फिक्र मत कर मरोड़ु। आज
बड़ा कोढ़ा लाया हूँ मैं।
हा हा हा।



और दैत्यों को देखते ही मानवों में भगदड़ मच गई-

तोड़-मरोड़ से बचकर
कहीं भागोगे ? हा हा
हा हा हा हा !

दैत्य आ
गए। भागो।

दैत्य ! ई
ई ई ई !

भागो!

भागो।
भागो।

तुम भाग जाओगे बच्चो तो बड़ा
भौंहा कैसे भरेगा ?

बचाओSS

चलो बड़े भोले में।
ही ही ही ही !

बचाओ!

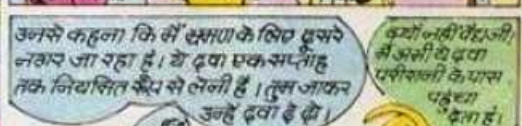
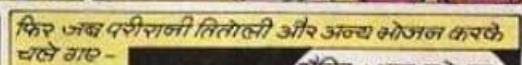
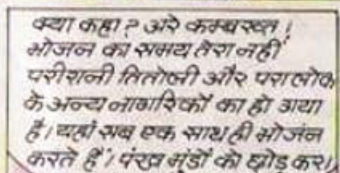


हमेश्वा की तरह इस बार भी अम्बारपुर के राजा अम्बारदास को मिली अपने सैनिकों की विफलता की सूचना-





फिर दरबार की कार्यवाही बरप्राप्ति कर दी गई।





बाँकेलाल सीधा पहुँचा राज उद्यान में-

इन पुड़ियों
की दवा की
अवाह परीरानी
तिलोली को भेजना
हूँ राज उद्यान के
बग़ारों की सफ़ेद
सिंदूर। ही ही ही।
इस दवा का कमाया
मैं कल दिखवाऊँगा
परीशोक वासियों
को। ही ही ही।

उधर बाँकेलाल अपनी योजना बना रहा था...

... और उधर बुलबुला के राजमहल में-

दैत्यराज की जय
हो। दैत्यराज, महाबुर
जुगालीराज अपनी
तपस्या पूरी कर
महल लौट रहे हैं।

क्या? क्या
सच?



दैत्यराज सहित दैत्यों की भारी भीड़ जुगालीराज
का स्वागत करने पहुँच गई महल के मुख्य
द्वार पर-

महाबुर, जुगालीराज...

जिन्दाबाद!

जिन्दाबाद!



जुगाली करता हुआ धीरे-धीरे महल
की ओर बढ़ रहा था जुगालीराज।



बाकिराल ने पड़िया में रखी सारी दवा खीर से भरी डेवा में उड़ेल दी-

अब आयेगा मजा। इन सब के मूर्खित होते ही मुझे अपना काम करने का अवसर मिल जायेगा।



परीराणी तिलोत्ती सहित सभी परीलोक वासी भोजन करने लगे-



अह! सत दवा लेने के बाद मुझे नींद नहीं आई। न जाने इस बार वैद्यजी ने कैसी दवा दी है।

फिर जैसे ही बाकिराल दवा डेवा में उड़ेलकर रसोईघर से बाहर निकला-



ओह! सभी परीलोक वासी परीराणी तिलोत्ती के पीछे-पीछे आ रहे हैं भोजन करने की ओर।

और भोजन करते ही-



ओह यह क्या?

भोजन करते ही ऐसा सिर भारी हो गया।

मुझे गहरी नींद आ रही है।

वाह! धन क्या काम।

देखते ही देखते सब बेहोश हो कर वहीं सुदक गए।



वह दृश्य देखकर बांकेलाल
के साथ स्वप्न पंचकुंडा
सैनिक चौक पड़ा-

किन्तु अचानक ही पल प्रसन्न हुआ
वह भी भोजन पर दूट पड़ा-

खीर खाते ही वह भी
लुढ़क गया-

अरे! यह
क्या भोजन
करके ये सब
तो यहीं सो गए।

चलो अच्छा हुआ। अब मैं भी
लगे हाथों पेट पूजा करूँ।
कम्बख्त भूख बहुत लगी है मुझे।

चलो अच्छा हुआ
ये भी गया काम
से।

ही ही
ही। अब
पूरे परीलोक
में केवल
मैं जाग
रहा हूँ।
हा ही
हा।

तब बांकेलाल
ने बुरा किया
अपना काम।

सबसे
पहले निकालूंगा
परीसानी
तिलोली के
संस्व।

कड़ाक

एक-एक करके बाँकेलाल परिलोक के सभी निवासियों के पंख उतारता चला गया।





रसोईदार पहुंचते ही वैद्यजी सबल रह गए -







तभी परीलोक बाएँ दोनों कबूतर भी वापस लौट आए। उन्होंने राजा अन्जारदाजा के कानों में जाने क्या बुदबुदाई की, कि चौक पड़ा राजा -



क्या ?
परीलोक
पर दैत्यों
का
आक्रमण

राजा अन्जारदाजा अपने वीर सैनिकों की विशाल सेना के साथ उड़ चला परीलोक की ओर -



अबले ही पल राजा अन्जारदाजा ने चीरव कर आदेश दिया -

सैनिकों! दैत्यों से धुलकारा पाने का वक़्त आ गया है। उठाओ ये पंख। हमें इसी समय परीलोक पहुँचना है।



उधर परीलोक की सेना के हाथ-पाँव फूले पड़े थे -

हम तो सोच भी नहीं सकते थे कि दैतव इस प्रकार अचानक आक्रमण कर देंगे। हमारे तो बास्त्र भी अंग रच चुके हैं।









परीराणी तिलोत्ती बाबा-बाबा बुद्ध पहुंची राजा अनारदाजी के निकट -

हे पृथ्वी सम्राट!
अब आज आप
समय पर यहां न
पहुंच पाते तो दैत्यों
का सफाया असम्भव
था।

समय पर पहुंच तो आप
ही नें फेंके थे मेरे महल के
प्रांश में परीराणी तिलोत्ती,
फिर मेरे भजे दोनों
कष्टतरों ने जब मुझे
बताया कि परीलोक
संकट में है तो मैं तुरन्त
बना आया। सफा
नहीं।

ठमने नहीं! पंख तो
बाकिलाल ने फेंके
थे।

बाकिलाल!

और अब तक
बाकिलाल सोच-समक दुका था कि
इन्ने बदले हुए हालातों में उसे क्या कहना है?

परीराणी! वह पंख मैंने बदलाव लेने
के उद्देश्य से नहीं, बल्कि परीलोक
की दैत्यों से रक्षा करने के लिए
ही नीचे फेंके थे।...

... जब पृथ्वी सम्राट के वे दोनों
कष्टतर सीधे मेरे पास पहुंचे
और उन्होंने मुझे बताया कि
दैत्य परीलोक पर चढ़ाई करने
वाले हैं।...

... तो मुझे लगा कि
परीलोक दैत्यों से टकराने
के लिए बिल्कुल तैयार नहीं
हैं। अतः मैंने यह योजना
बना डाली।



ओह! और हम
तुम्हें वापस भेजना
चेहे। हमें क्षमा कर दो
बाकेलाल! तुमने
तो पूरे
परीलोक
की रक्षा
की है।

मुझे भी
क्षमा करें
बाकेलाल

जो हुआ उसे
गुन जाओ
मुझे आपसे
कोई शिक्का
नहीं है।

और
तभी -

मेरा ध्यार
बाकेलाल!



उफ! ये तो मुच्छहू है।
ये मरानही अभी तक।
अब ये अपने बंदूधूदार
मुंह से मेरी पुच्छी लेना।



मुझे तो है अपनी
कुटी किरमत से
दियायल। बंदूधू!
यदि मुझे पता होता
कि ध्यार राज भी
'पसे' के पंखों के
चक्कर में है तो
क्या मेरे सिर में
पीड़ थी जो मैं ऐसा
करता।



मेरा ध्यार बाकेलाल!
तेरे बिना तो सब कुछ
पीका हो चला था ये
मेरे चौद!

मुच्छ

वचाओ!



और तभी हो गये दोनों गायब -

अरे! ये दोनों
कहां गए?

ये दोनों तो
गए, अब हम
भी पृथ्वीलोक
वापस जायेंगे।
आप अपना एक
'परा' पंखों को
वापस लाने के
लिए हमारे साथ
मेज दें परीरानी
तितोली!

समाप्त